Page No. :
Date : / /

गेहूँ की कृषि में बड़े पैमाने पर यंत्रों का प्रयोग किया जाता है, इसलिए इसे समतल मैदानी भाग की आवश्यकता होती है।
गेहूँ की कृषि में यंत्रों का प्रयोग अधिक किया जाता है, अतः इसकी कृषि के लिए अधिक श्रम की आवश्यकता नहीं होती।

उत्पादन तथा वितरण

गेहूँ की कृषि मुख्यतः पश्चिमी उत्तर प्रदेश, पंजाब तथा हरियाणा में की जाती है। उत्तर प्रदेश सबसे बड़ा उत्पादक है, जहाँ भारत का लगभग एक-तिहाई गेहूँ पैदा किया जाता है। देश में कुल गेहूँ उत्पादन का लगभग दो-तिहाई भाग पंजाब, हरियाणा और के कुछ भागों में 4,000 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर गेहूँ पैदा किया जाता है। गेहूँ के अंतर्गत क्षेत्र को भी अब काफी बढ़ा दिया गया है।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

Scanned with CamScanner

Page No. :
Date : / /

पश्चिम बंगाल के किसान वर्ष में चावल की तीन फसलें लेते हैं जिन्हें औस, अमन तथा बोरो कहा जाता है।

गेहूँ (Wheat)

चावल के बाद गेहूँ हमारे देश की दूसरी महत्वपूर्ण खाद्य फ़सल है। भारत गेहूँ का विश्व में चौथा बड़ा उत्पादक देश है और यह विश्व का 8% गेहूँ उत्पन्न करता है। देश के उत्तर-पश्चिमी भाग में रहनेवाले लोगों का यह मुख्य आहार है।

उपज की दशाएँ

गेहूँ की उपज के लिए निम्नलिखित दशाएँ अनुकूल हैं:

i) गेहूँ को बोते समय 10° सेल्सियस तथा पकते समय 15° से 20° सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है।

ii) गेहूँ की कृषि के लिए 75 से॰मी॰ वार्षिक वर्षा की आवश्यकता होती है। 100 से॰मी॰ से अधिक वार्षिक वर्षावाले क्षेत्रों में गेहूँ की कृषि नहीं की जाती। वास्तव में 100 से॰मी॰ वार्षिक वर्षा की समवर्षा रेखा गेहूँ तथा चावल के क्षेत्रों को अलग करती है। सिंचाई की सहायता से गेहूँ 20 से॰मी॰ वार्षिक वर्षावाले क्षेत्रों में भी उगाया जा सकता है।

iii) गेहूँ की कृषि अनेक प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है, परंतु हल्की मृत्तिका मिट्टी, मृत्तिकायुक्त दोमट मिट्टी, भारी दोमट मिट्टी तथा बलुई दोमट मिट्टी इसके लिए उत्तम होती है।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

Scanned with CamScanner

21/8/19

Page No. :
Date : / /

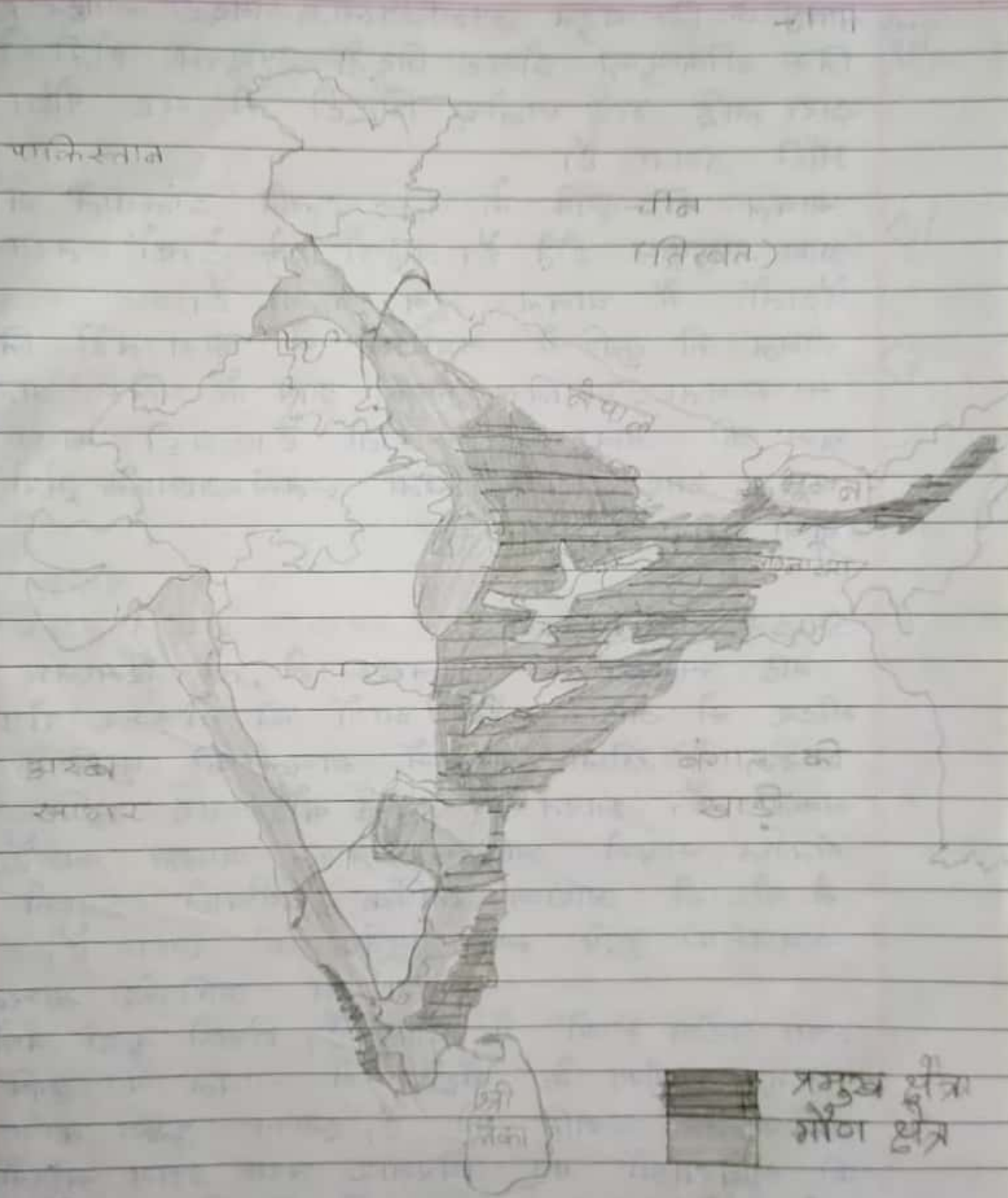

भारत - चावल का वितरण

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

Scanned with CamScanner

Page No. :
Date : / /

21/8/19

iii) चावल के लिए बहुत उपजाऊ मिट्टी चाहिए। इसके लिए चीकायुक्त दोमट मिट्टी उपयुक्त होती है। नदियों द्वारा लाई गई जलोढ़ मिट्टी में यह पौधा भली-भाँति उगता है।

iv) चावल की कृषि के लिए हल्की ढालवाले मैदानी भाग अनुकूल होते हैं। नदियों के डेल्टों तथा बाढ़ के मैदानों में चावल खूब फलता है।

v) चावल की कृषि में मशीनों से काम नहीं लिया जा सकता, इसलिए इसकी कृषि के लिए अत्यधिक श्रम की आवश्यकता होती है। यही कारण है कि चावल साधारण तथा घनी जनसंख्यावाले क्षेत्रों में बोया जाता है।

उत्पादन तथा वितरण

यदि ~~प्राप्त~~ जल उपलब्ध हो, तो हिमालय के 2,400 मीटर से अधिक ऊँचे भागों को छोड़कर शेष समस्त भारत में ग्रीष्म ऋतु में चावल की कृषि की जा सकती है। भारत में ~~कोई~~ बोई गई भूमि के अंतर्गत सबसे अधिक क्षेत्रफल चावल का है। 100 से.मी. से अधिक वार्षिक वर्षावाले इलाकों में चावल की कृषि सफलतापूर्वक की जाती है।

भारत का अधिकांश चावल डेल्टाई तथा तटीय भागों में होता है। पिछले कुछ वर्षों से सतलुज-गंगा के मैदान में चावल की कृषि ने उल्लेखनीय उन्नति की है। इसका मुख्य कारण सिंचाई की सुविधाओं का विस्तार तथा उत्तम बीजों का प्रयोग है। हिमालय पर्वत की निचली घाटियों में भी सीढ़ीनुमा खेत बनाकर चावल की कृषि की जाती है।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

Scanned with CamScanner

भारत में पाए जाने वाले प्रमुख क्षेत्र मे चावल, गेहूँ, गन्ना, मक्का, दाले, ज्वार के उत्पादन के लिए भौगोलिक दशाओं को लिखे।

चावल (Rice)

चावल हमारी सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण खाद्य फसल है, जिस पर भारत की आधी से भी अधिक जनसंख्या निर्भर करती है। चीन के बाद भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश है। विश्व का 22% चावल क्षेत्र भारत में ही है। भारत की कुल कृषीय भूमि के 23% भाग पर चावल बोया जाता है। 150 से.मी. से अधिक वार्षिक वर्षावाले इलाकों में चावल लोगों का मुख्य आहार है। इसकी 3,000 से भी अधिक किस्में हैं, जो विभिन्न कृषि जलवायु प्रदेशों में उगाई जाती हैं।

उपज की दशाएँ

चावल की उपज के लिए अनुकूल दशाएँ निम्नलिखित हैं अग्रलिखित हैं:-

चावल की कृषि के लिए कम से कम 20° सेल्सियस तापमान होना चाहिए। इसे बोते समय 21° सेल्सियस, बढ़ते समय 24° सेल्सियस तथा पकते समय 27° सेल्सियस तापमान की आवश्यकता होती है।

चावल की फसल के लिए 125 से 200 से.मी. वार्षिक वर्षा आवश्यक है। 100 से.मी. से कम वार्षिक वर्षावाले इलाकों में सिंचाई की सहायता से चावल की कृषि की जाती है।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

Scanned with CamScanner

Page No. :
Date : / /

3/8/13

ii) सामान्य जनसुविधाएँ – ग्रामीण इलाकों में शौचघर एवं कूड़ा - कचरा निस्तारण की सुविधाएँ नगण्य होती हैं, जिससे स्वास्थ्य संबंधी सेवाएँ भी पर्याप्त नहीं होती हैं और इस सेवाओं को प्राप्त करने के लिए ग्रामवासियों को नगरों की ओर जाना पड़ता है।

iii) असंतोषजनक आवासीय अवस्था – अधिकांश गाँवों में मकानों का निर्माण स्थानीय रूप से प्राप्त होनेवाली सामग्री सामग्री से किया जाता है, इनमें मिट्टी, गारा, लकड़ी, सरकंडे आदि प्रमुख होते हैं। इस प्रकार के मकानों को भारी वर्षा तथा बाढ़ की स्थिति में भारी नुकसान पहुँचता है और हर वर्ष उनके रख - रखाव की उचित अवस्था करनी पड़ती है। एक ही मकान में मनुष्यों के साथ पशु भी रहते हैं और उनके लिए चारा रखने की अवस्था भी मकान के अंदर ही करनी पड़ती है, ऐसी अवस्था पालतू पशुओं एवं चारे को जंगली जानवरों से सुरक्षित रखने के लिए की जाती है।

iv) परिवहन तथा संचार – अधिकांश गाँवों में तंग तथा कच्ची सड़कें होती हैं और वहाँ पर आधुनिक संचार अवस्था लगभग नगण्य होती है, कच्ची सड़कें वर्षा ऋतु में टूट जाती हैं और यातायात के लिए उपयोगी नहीं रहती। अतः गाँवों का शेष भागों से संपर्क टूट जाता है। इससे आपातकालीन सेवाएँ उपलब्ध

Scanned with CamScanner